साध सतनामी

साध सतनामी उत्तर भारत का महत्वपूर्ण समुदाय है। ये उत्तरप्रदेश के अलावा हरियाणा, पंजाब दिल्ली और हरियाणा में बड़ पैमाने पर निवास करते है। इनका प्रमुख ग्रन्थ निर्वाण ग्रन्थ के नाम से जाना जाता है। ये हरियाणा नारनौल शाखा से संबंध रखते हैं जिसमे संत बीरभान का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। सन्त बीरभान के अगुआाई में सतनामियों ने औरंगजेब से सालों तक मुकाबला करते रहै और अन्त में शाही सत्ता का शिकार हो चारों ओर बिखर गये। यह समुदाय सतनाम के सच्चे उपासक हैं। उनके ग्रन्थ की कुछ वाणियॉ इस बात का द्योतक है। बानी और नौनिद्धि के माध्यम से सन्त कबीर व अन्य प्रमुख गुरूओं की बाणी को संजोये अपना सादगी जीवन के लिये सतनामी आज भी जाने व माने जाते हैं। सतनामियों की संख्या पूरे भारत में **5** करोड़ के आस पास आंका जाता है। आओ भारत भूमि को हम सब मिल कर सतनाम मय बनायें। यही हमारे गुरूओं की सच्ची सेवा व श्रद्धा होगी।

साध सतनामी निर्वाण ग्यान का "संक्षिप्त सार"

निर्वाण ग्यान अर्थात् मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग बताने वाला ग्यान, किसी मनुष्य की कृति नहीं, सब संसार से एक अलग, निराली, अनूठी, वस्तु, अघट खजाना, तथा सच्चे गुरू सत्तगुर बाबा उदादास का दर्शाया हुआ, सुनाआ हुआ है तथा उन परमानी बन्दों (पूरे सत्तनामी साधों) का जिन्होंने जुगती के साथ साधना साधकर शुद्ध, तन, मन से "सत्तअवगत" का सुमरन, जाप, ध्यान बन्दगी, भक्ति, गरीबी, अर्ज, विनती, अर्दास, आजीज के साथ करी और सच्चे गुरू सत्तगुर गुरू बाबा उदादास के हुकम पूरे – पूरे माने और हुकम के अनुसार भक्ति करी वे इस भवसागर से पार हो गये, उन्हे गत्त मुकत की प्राप्ति हो गई। जिस प्राणी का गत मुकत का पट्टा लिख दिया जाता है, वह प्राणी इस काँची देह छोड़ने के बाद सीधा अमर होकर भिस्त में, अगम घर, अमरापुरी दरबार सत्तगुर अबगत के पास पहुँच जाता है तथा संसार में दुबारा आवागमन (जन्म, मरण) के चक्कर से मुक्त हो जाता है।

परस पढ़े सत्त एक है।
दाता अबगत एक।
एक सत्तअबगत हिरदे जान्ा
सबका मालिक एक है
कर्ता एक
दाता एक
पैदायश एक की
सुमरन एक का
मालिक की सब बनी बनाई
झूठी है अपनी चतुराई

भूमिका **1**
यह पुस्तक साध स्त्री–पुरूषों और उनकी सन्तानों को विशेष जानकारी देगी। जो रोज उदादास बाबा का ग्यान सत्तगुर की सीख को पढ़ते हैं, उनको यह पुस्तक बहुत जल्दी समझ में आयेगी। जो मनुष्य सत्तगुर के हुकम को मानेंगे, उनकी चाहना जरूर पूरी होगी। इस पुस्तक को एक बार रोज समझकर पढ़ने से निश्चय ही लाभ होगा।
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!
— "सहदेवनरायन साध"

भूमिका **2**

इस पुस्तक में गरीबी, अरदास, बीनती, गुरू की सिफत का गुणगान है। हम क्या करके क्या पा सकते हैं, हम कैसे शान्तिमय जीवन व्यतीत करें, मन की व्यथा कैसे मिटै, मन के उद्‌गार कैसे निर्मल रहें, समर्पण भाव में सच्चाई कैसे आवै, भक्ति कैसे करैं, निर्वाण ग्यान की लगमातों के द्वारा समझाया गया है।

"साँच हिरदे संचरै जब होय साध निदान" साँच यानी गुरू की सिफत, गुरू के हुकम माफिक संचारित हो अर्थात हिरदे में नाम और ग्यान बस जाये जिससे साधों की सारी समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

— राज मुकुट साध

सरल अर्थ

अवगत (अविगत) ः अविनाशी, जिसका नाश ना हो, अवर्णनीय, जो जाना ना जाय, अगम, अपार, अगाध, सच्चो

सत्त ः अजर, अमर, अमिट, सच्चो, अगम, अपार

सत्तगुर ः सच्चा गुरू, मालिक, दाता, पाँच तत्व, तीन गुनों से न्यारे (परे)

नोट ः पाँच तत्व तीन गुन किरतम (कृत्रिम) पसारा है।

1 सत्तअबगत, सत्त, सत्तगुर की सिफत

हे मेरे मालिक दाता सच्चे गुरू सत्तगुर गुरू बाबा उंदादास जी इस गरीब दास की तुम्हारे चरनौं में अरज बीनती, गरीबी, अरदास, भाव, चाहना है, बारम्बार डण्डौत हैं। इस गरीब दास को कृपा करके बोलने की लिखने की बुद्धि, शक्ति, गरीबत देव, जो भी लिखें बोले मधुर, मीठा, गरीबत, दासता से भरा हुआ, ज्ञान की हद में हो।

सत्तअवगत कौ डण्डौत, बाबा उदादास कौ डण्डौत-सत्तगुर कौ डण्डौत। सत्तनाम सही।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

(ल) सत्त कहु सत्त कहु सत्त कहु होमना। अवगत सा और दूजा ना कोई
(ल) सत्त बराबर नाय दूजा यो। कहै गुर ग्यान
(ल) हाँजी भगत मारग समझ भाई सत्त के गुन गाउ। और भरमना छाँड़ दे तू साध नाम कहाउ

सृष्टि के कर्ता, मालिक, दाता, सत्तअवगत धनी जी, सच्चे गुरू सत्तगुर गुरू बाबा उदादास जी आप सत्तगुर साहिब की सरन, आप सतगुरू साहिव की आस, आप सत्तगुर साहिब के चाहे की आस, आप सत्तगुर साहिब के चरनौ की आस, आप सतगुर साहिव के चरनौ में शीश टेक बारम्बार डण्डौत।

2 सत्तअबगत की सिफत

स्वांस धारना के भेदी, माहे की दिल की पल-पल की जानने वाले दिलौ के मालिक। खाने के लिये चुगा रिजक, पीने को पानी, सीख, बुद्धि, शक्ति और इस तन सहित जो भी संसारी चीजें, सुख है उनके देने वाले दाता। कृपा मेहर करके जन्म-जन्म, जुगां-जुगां की तकसीर, गुनाह, पाप जो जाने अन्जाने में भये हों, उनको माफ करने वाले, चौरासी जमदंड आवागमन के दुखों से छुटकारा देने वाले, जुगप्रलय, महाप्रलय से बचाकर, सत्तनाम रूपी अमृत पिलाकर, अमर करने वाले, अमरापुर पहुँचे, ऐसे भेद बनाने वाले, सृष्टि के कर्ता, मालिक दाता, सत्तअवगत धनी जी, सच्चे गुरू सत्तगुर गुरू बाबा उदादास जी, आप सत्तगुर साहिब तुम ही हो।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

कृपा मेहर करके खिमा-खिमत के लक्षण देकर साधों को ज्ञान, ध्यान से रचाने वाले, अनभै सुनाकर भरम भौ मेटने वाले, सत्तअबगत, सत्तनाम को लेने का, हृदय मे रखने का, भक्ति, बन्दगी, सुमरन, जाप, ध्यान, करने का, सत्त के गुण गाने की बुद्धि, शक्ति गरीबत देने वाले, नौखण्ड पृथ्वी पर ज्ञान का हेला देकर, साधों को जगाकर, कुमार्ग

से बचाकर, सच्चे सही मार्ग से लगाने वाले, भव सागर से पार उतारने वाले, शिव और शक्ति को परलौ से बचाने वाले, महादेव और लक्ष्मण जी को मरने के बाद जियाने वाले, प्रहलाद की कॉंची देह अग्नि से उबारने वाले, मीरा को जहर से बचाने वाले, मक्खी की योनि से छुटकारा देकर शक्ति को दुबारा मनुष्य जन्म, (नारी देह) देने वाले, सुआ की योनि से छुटकारा देकर सुखदेव को दुबारा मनुष्य देह देने वाले, दिल्ली को अलूरे के मानिन्द, पत्थर होने से बचाने वाले।

सृष्टि के कर्ता मालिक, दाता, सत्तअबगत धनी जी, सच्चे गुर सत्तगुर, गुरू बाबा उदादासजी आप सत्तगुर साहिब तुम्हीं हो।
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!

हुकम के माफिक सत्तअबगत सत्तनाम के लेने वाले के प्राछत, कुल विषै प्रानी के मेटकर चांदना करने वाले, ममता मुंझ मेटकर ब्रह्म कौ उबार कै कारज सबै पूरे बनाने वाले, सहसं भरम, अनेक भर्म, तीरथ व्रत, पत्थर की पूजा से बचाने वाले पन का धागा देकर साधों के प्रानी को अमिट करने वाले, सत्तअबगत को सुमरन, मन, प्रानी से स्वासं की रास्ता कराकर अनभै को अधिकारी बनाने वाले विशन, महादेव, पारबती, राम, किशन जैसे देवी देवता जिनके कर्त्तव्य देखकर जगत भरमाय गऔ ऐसे देवता साधों को बनाने वाले, सुम्मेर परबत को डिगाने के लिये हनुमान, नरसिहं, कारा, गोरा, खेत्रपाल इत्यादि। बाउन वीर चौसठ भवानी (जोगनी) को डंकनी सात शबद सै करके, उसकी कोख बढ़ोत्तर करके हुकम पैदा करने वाले।

सृष्टि के कर्ता मालिक, दाता, सत्तअबगत धनी जी, सच्चे गुरू बाबा उदादासजी आप सत्तगुर साहिब तुम्हीं हो।
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!

कुवध की बान छुटाकर धिक संसार स्वान जैसो दिखाने वाले गंभीर सत्तगुर का ग्यान देने वाले, सत्त शब्द का मसकला फिरवाकर मन के मैल काटने वाले, सत्त शब्द की कूंची लगवाकर गरभ, गुस्सा, अहंकार, विडारा मेटन वाले कहनी और रहनी की साधना सधवाने वाले, दुधारा शब्द देने वाले, कृपा मेहर करके दर्शन देकर सब मन के कल्प विकार मेंट कर अनंत फल देने वाले, संसा मेट कर हिरदे में अनभै ग्यान का दीपक जलाने वाले, रोश, गुस्सा, क्रोध, अंहु कुबन मेटने वाले सत्तअबगत सत्तनाम में सुरत लगाने वाले, सनमुख दर्शन देकर सच्ची सीख सुनाने वाले, गत मुकत को पट्टो लिखने वाले, गत मुकत के देने वाले, सृष्टि के कर्ता, मालिक, दाता, सत्तअबगत धनी जी आप सत्तगुर साहिब तुम्हीं हो।
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!

सृष्टि के कर्ता, मालिक, दाता, सत्तअबगत धनी जी, सत्तगुर गुरू बाबा उदादास जी, आप सत्तगुर साहिब के चरनों में शीश टेक बारम्बार डण्डौत
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!

(ल) पांच तत्व का किया पसारा। सो सौंपा सत्तगुर को सारा
(ल) भाव भाव सिद्ध कत बतलावे। जैसा भाव जैसी सिद्ध पावे
(ल) सत्तगुर जुग–जुग पुजवै आश। दासकबीर उदादास
(ल) उदादास गोरख जी के सिख हैं। जे चाहा ही भर देशी

3 गरीबी अरदास

कृपा करौ मेरे मालिक दाता सच्चे गुरू सत्तगुर गुरू बाबा उदादास जी हम है भौसागर माहि। भरम जायेंगे जो ना पकड़ी हमारी बांह। बांह पकड़ ठाड़ा करौ भौसागर के तीर। हम हैं बच्चा तुम्हारे तुम ही हौ पिता हमारे, अवगुण

हमारे दूर कर देव, भक्ति दिड़ाय देव, ऐसी कृपा करो हम तुम्हारे हुकम के मूजब भक्ति सदा करते रहें, यही हमारी तुम्हारे चरनौं में अरज, बीनती, गरीबी, अरदास, भाव हैं, चाहना है, बारम्बार डंण्डौत।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सत्तगुर साहिब इस गरीबदास की तुम्हारे चरनों में अरज है बीनती है गरीबी है, अरदास है, भाव है, चाहना है, बारम्बार डण्डौत है, कृपा मेहर करके जन्म-जन्म के तकशीर गुनाह पाप जो जाने अनजाने में भये हों, उन्हें माफ कर देव ऐसी कृपा मेहर करो आगे कभी भी तकशीर गुनाह पाप के काम ना होय।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सत्तगुर साहिब इस गरीवदास की तुम्हारे चरनों में अरज बीनती, गरीबी, अरदास, भाव हैं चाहना हैं, बारम्बार डण्डौत है, कृपा करके इस गरीब दास को पूरे संतो के समान, भक्ति करने की बुद्धि, शक्ति, चाव भाव, प्रेम, गरीवत, पूरी पूरी परतीत देव। यह गरीब दास तुम्हारे हुकम के मूजब पूरे संतो के समान, भक्ति, वंदगी, सुमरन, जाप, ध्यान, गुणगान सदा करते रहें।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सतगुर साहिब इस गरीब दास की तुम्हारे चरनों में अरज, बीनती, गरीबी, अरदास, भाव चाहना है बारम्बार डण्डौत है। कृपा मेहर करके इस गरीब दास के तन, मन, प्राणी कौ सदा हमेशा के वास्ते पूर्ण शुद्ध, सच्चो, नेकनियत, ईमानदार, निश्कलक करकै पूर्ण स्वस्थ निरोगी कर देव, समस्त बुराइयों, दोष के काम दूर करके, वत्तीस लच्छन देकर अपनों सच्चों पूरो सिख, चेला, दास, चाकर, हुकम को मानन वालों वच्चा सदा हमेशा के वास्ते बनाये लेव और ऐसी शक्ति देव हर समय तुम्हारो हुजूर में हाजिर रहे और तुम्हारे हर हुकम को पूरो कर सकै।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सत्तगुर साहिब, इस गरीब दास की तम्हारो चरनों में अरज, बीनती, गरीबी, अरदास भाव हैं, चाहना है, बारम्बार डण्डौत है। खेत के समय सहस्त्र वन्दों पर जो कृपा मेहर, उपकार, करो थो वही इस गरीब दास पर इस समय कृपा मेहर, उपकार, करौ इस गरीब दास को रोश, गुस्सा, क्रोध, अहुं, कुवध पूरो पूरो मेंट देव, जिससे जौ दास तुम्हारे हुकम को पुरो पूरो मानकर इसी जन्म में भौसागर के पार होकर सदा के वास्ते तुम्हारे चरन पावै। इसी जन्म में पहचान के साथ तुम्हारे दर्शन हों। तुम्हारी सच्ची सीख सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो, गत मुक्त प्राप्त हो, इस गरीब दास का प्रानी, स्वांशा, सुमरन करत भये शरीर कौ छोड़ें।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सत्तगुर साहिब इस गरीब दास की तुम्हारे चरनों में अरज, बीनती, गरीबी, अरदास है भाव हैं, चाहना है, बारम्बार डण्डौत है, ऐसी कृपा करो जौ गरीब दास हमेशा आप सत्तगुर साहिब के चाहे को देखै, चाहे को गावै, चाहे के मूजब काम करै, चाहे के मूजब जीवन व्यतीत करै, रंसार में ऐसै रहे जैसे कीचड में कमल।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सत्तगुर साहिब इस गरीब दास की तुम्हारे चरनों में अरज, बीनती, गरीबी, अरदास है भाव हैं, चाहना है, बारम्बार डण्डौत है, कृपा मेहर करके इस गरीब दास को भगत भेद सै राचा रूमा रूम करकै लगमाता मेहरम (जानकर) हमेशा के वास्ते कर देव, सत्त को ध्यान देव, स्वांसा सुमरन वक्स देव। आठ पहर चोसठ घड़ी, उठत बैठत, चलत-फिरत, सोवत-जागत, हर समय तुम्हारी कृपा मेहर से तुम्हारे सहारे इस गरीब दास से स्वांशा सुमरन होता रहे।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

हे मेरे मालिक दाता सत्तगुर साहिब मेरा मुझमें कुछ नहीं, आत्मा और तन सहित जो कुछ मेरे पास है, तुम्हारा है, तुम्हारी अमानत है। तुम्हारी अमानत तुमको समर्पित करते हैं, सौंपते हैं, स्वीकार करे, स्वीकार करो, स्वीकार करो। तुम्हारी मेरे उपर बड़ी कृपा है, और कृपा करो, अपनी कृपा सदा बनाय रखियौ, मालिक दाता।
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!

4 अबगत धनी जी की सीख

(ल) अहूंकरी जिन भेद ना पाया। कुवधी अपना जन्म गमाया।
(ल) अहूं मेट के भगत करैला। सो सत्त सेती प्रेम धरैला।
(ल) कबीर जी कौ सीख अवगत जी दीनी। जब वह शक्ती संग कर दीनी।
सत्तअबगत! सत्तअबगत! सत्तअबगत!

5 सत्तगुर की सीख

(ल) कहौ गोविन्दा किस विध रूठा। रोष करे ते हिये फूटा।
(ल) रोष करे ते मूरख होई गुसां करे मैं नफा ना कोई।
(ल) जोगां जोग चलौ रे भाई। अहुं कुबध की मेटौ काई।
(ल) सत्तनाम सै सुरत लगावै। सो सत्तगुर पर पटा लिखावै।
(ल) सत्तगुर सीख बतावै सच्चा। ये ही सीख चलौरे बच्चा।
सत्तअवगत! सत्तअवगत! सत्तअवगत!

(ल) सत्तगुर की सीख सुने भल होई। क्रोड़ा मंझे चलसी कोई।
(ल) जिन सत्तगुर की सीख ना मानी। ते भरम पड़ा चौरासी खानी।
(ल) सत्तगुर कहैं शब्द कौ परखौ। तौ लोकालाज न करियै।
(ल) जिन सत्तगुर चौकस कर जाना। तिन तौ पाया मुकत ठिकाना।
(ल) जिन सत्तनाम सही कर लीया। धन-धन साधौ उनका जीया।
(ल) सत्तनाम सै सुरत लगावै। जिसकौ सत्तगुर सांची सीख सुनावै।
(ल) एक बार अवगत की देखौ। उनकी सब पैदायश परखौ।
(ल) संहस कौ छाड़ और एक हिरदे जपै। सत्त की कार संसार सारै।

5 प्रश्नोत्तर
प्रशन—सत्तगुर साहिब के दर्शन कैसे हों।
उत्तर— (ल) खोटा बचन काहे कौ काढ़ौ। सत्तगुर मिलैं जुंभा कौ साधौ।
(ल) मान मगज में ते नर भूला। कुड़ियारा से दर्शन दूरा।
(ल) साध-सधीरा पारस पूरा सत्तवादां से सतगुर नेड़ा।
प्रशन— अहूँ कुबध कैसे मिटै।
उत्तर— (ल) बन्दगी करै नफा बहुतेरा। अहूँ कुवध का मिटै अधेरा।
प्रशन— शरीर को सुख कैसे प्राप्त हो।
उत्तर— (ल) अहूँ कुवध तुम मनसै त्योगौ। भाई सुख पावैला शरीर।
प्रशन— हृदय में प्रकाश कैसे हो।
उत्तर— (ल) लेत सत्तनाम के सदां होय चांदना। झरत प्राक्षत कुल विषै प्रानी।
प्रशन— बुराई मोह ममता कैसे मिटैं।
उत्तर— (ल) कुवध कटै सत्त शब्द सै, ममता मुझ मरंत। बृह्म शब्द से ऊबरै कारज सबै सरंत।
(ल) करमन शब्द सत्तगुर ध्यान, जासै कारज होय तेरा यही मनमै जान।

प्रशन— भौ सागर से कैसे पार हो।

उत्तर— (ल) सुमर सत्तनाम जान ह्रिदे सही लेऔ गुर ग्यान भौ पार उतारे।

(ल) साधौ सत्त सुमरन सै जी तिरियैटेक सत्त की भगत विना रे प्रानी जन्म जन्म दुख । भरियै।

(ल) सत समझकर सुमरन करना। पर हर झूठ सांच संग रहना।

प्रशन— माया कैसे प्राप्त हो।

उतर— (ल) कोई साध हिरदे नाम धरैटेक आठ सिद्ध नौ निध कहा वापरी लर-कत लार फिरै।

प्रशन— तीनों लोकों की जानकारी कैसे हो।

उत्तर— (ल) वाका नाम नौखण्ड में जपत कोई सन्त। जिन ऊभ पाताल तीनों लोक जानी।

(ल) हाँजी शीश सदाँ पासंग ही राखा, मिथ्या कभी ना भाखा एक सत्तअवगत हिरदे जाना झूठ भरम ।सब त्याग

प्रशन— ध्यान कैसे मालिक के नाम मैं लगा रहे।

उत्तर— (ल) आठो पहर जपौ अवगत कौ, तौ सुरत रहै वाही सत्त सै।

(ल) तन का लालच मत कोई राखौ। जब लग बोलै बृह्म सत्त ही सत्त भाखौ।

प्रशन— सत्तगुर ने क्या भगत बताई।

उत्तर— (ल) साधौ म्हानै सत्तगुर भगत बताईटेक लोभ, मोह, अहंकार, परहरा तौ शील छिम घट आई।

(ल) काम, क्रोध और तृशना मारी। तौ धीरज अचल रहाई।

प्रशन— बदी (बुराई) कैसे खत्म हो।

उत्तर— (ल) नेकी नियत जिन नै आनी। बदी सब मारी है।

प्रशन— सत्तगुर के प्यारे कैसे बनौ।

उत्तर— (ल) कहानी कहै रहनी कौ साधै। भाई सो सत्तगुर जी रा प्यारा।

प्रशन— सत्तगुर ने क्या तंत बताया "गत कैसे होगी"।

उत्तर— गत होयगी सत्तनाम सै सत्तगर तंत बताया।
मन तेरी नाम सै गत होय गत होगी सत्तनाम सै रे। भामैं नौखंड पिरथी जोय।
सत्त सै गत है साध कूंभा पढ़ै। सत्तगुर की महिर सै मौज पाई।
हांजी साहिब उदादास गोरखजी के सिख हैं। साहिब तुम दरसे गत्त पाजै।

प्रशन— स्वांसा सुमरन का लाभ (मुनाफा)।

उत्तर— स्वांसा सुमरन हिरदे राखै। रसना झूठ कभी नहीं भाखै।
ऐसा छीदा विरला कोई। जाकै स्वांसा सुमरन हिरदे होई।

प्रशन— पूरे साध के तन में क्या विशेषता होती है।

उत्तर— कहानी कहै और रहनी होई। ताकौ गंज न सक्कै कोई।
हांजी बदला किया बड़ा छक जीता जोग भगत फुरमाई।
साधां का तन हुकम खुसेला दूजे खुसा न जाई।
साधां का तन हुकम खुसेला। जिन आदू शबद पिछाना पहिला।

प्रशन— जुग-जुग भगत कैसे होई।

उत्तर— जुग-जुग भगत होइगी जब ही। सतवादां सै तड़क न वोलै कवहू।
तड़क बौलै सो बुरो अन्याई। उनको सत्तगुर की परतीत न आई।

प्रशन— चौरासी से कैसे बचें।

उत्तर— कांची देह छिनक मै फूटै। सत्त सुमरे चौरासी छूटै।
चौरासी में कभी न आवै। जुग-जुग अपना किसब कमावै।
किसब कमावै छीजै नाहीं। चौकस रहै अपने घर माहीं।
सत्तगुर उदादास का हो आया कभी न जाय। चौरासी भरमै नहीं म्हानै ऐसा बताया सत्तनाम्र।

प्रशन— शव्द की परख पूरी कौन करै।

उत्तर— शब्द की परख कोई साध पूरा करै। जाके रोष अहंकार व्यापै न कोई।
प्रशन— मांड़ के धनी कौन है।
उत्तर— मांड़ का धनी वह आप (अवगत) अगम है। साध सत्तगुर मिले गम्म पाई।
प्रशन— अन्त की बार जम सै कौन बचावैगा।
उत्तर— उदादास है सिख अबगत के। बांह सै पकड़ मोहि लै उबारैं।
प्रशन— माया शब्द की किसने पाई। भगत किसब कौन जाने।
उत्तर— हाँजी माय शब्द की, जिन ही पाई, जिन खोई कसरत तन की , भगत किसव सतवादी जानै, जिन ममता मेटी मन की।
प्रशन— भगत मारग क्या है।
उत्तर— हो मन जाप जुग जुग नाम। भाई मन जाप सत्त का नामटेक हांजी भगत मारग समझ भाई सत्त के गुन गाउ और भरमना छांड़ दे तू साध नाम कहाऊ।
प्रशन— ध्यान किसका करें।
उत्तर— हांजी नख सिख सै जिन रसना दीनी, शब्द सुनन कौ कान। पानी की बूंद से पिंड पैदा किया, घर वाही सत्त (सत्तअवगत) का ध्यान।
प्रशन— मन के मैल कैसे कटै।
उत्तर— सत्त शब्द का फिरा मसकला। भाई मैल कटा इस मन का।
प्रशन— करम के फंदा कैसे कटै।
उत्तर— सत्त बिन करम के फंद नाही कटैं। भगत बिन मनखा जनम हारै साधना साधे बिना करम फंद ना कटै। अनभै सुने बिना भरम भौ ना मिटै।
प्रशन— तीन अनी क्या है।
उत्तर— तीन अनीरा माझां जी सांवत सदा सम्हैरे साज
1. सत्तअवगत (सत्तनाम) का जाप करना, **2.** ग्यान में जो गुरू ने हुकम दिये उन पर चलना, **3.** सच की साधना यानी सच बोलना।
प्रशन— अनभै के अर्थ कैसे पावैं।
उत्तर— अनभै के अर्थ परासुध पावै। जो तन सांटे की भगत कमावै।
प्रशन— कुवध का जार क्या।
उत्तर— हांजी किरमत की जब सुरत आवै यही कुवध का जार।नाम सै लागा रहैं तो नाय भार लिगार।
प्रशन— हरीदास कौ सत्त का ध्यान किसने दिया।
उत्तर— हांजी उदादास गोरख जी के सिख हैं ये तौ जुग जुग हुआ छै जमान। महिर हुई हरीदास ऊपर दिया सत्त का ध्यान।
प्रशन— रिजक मौत किसके हाथ में है।
उत्तर— वंदा रिजक धनी रे हाथ, पीछे थारी मौत खड़ी रिजक मौत अवगत के सहारे। उनके चेला कौ मारै।
प्रशन— स्वांसा सुमरन की पहचान।
उत्तर— बंदा कोई परमानी छीदा सा, जो दम निकसै भगत तरफनै तो अन्दर सुमरन स्वांसा।
प्रशन— सतगुरू साहिब ने साधों की आस पूरी करने की क्या रास्ता बताई है।
उत्तर— हरफै हरफ लखै बतलावे तौ अवगत लखै जी दिलासा।
प्रशन— क्रोध कैसे ना आवै।
उत्तर— वंदा कोई आदू बिरद पिछानैटेक मोम दिली मन माहि दलेली तौ ताता ताव ना आनै।
प्रशन— दुधारा शवद
उत्तर— सत्तगुर शवद दुधारा दिया। भाई मिट गया कुवध अधियारा सत्तअवगत नाम लेने से शवद की माया जमा होती है, "एक धार" दूसरी तरफ समस्त कालौ का नाश होता है "दूसरी धार"।
प्रशन— मन को शान्ति कैसे मिले।
उत्तर— सत्तगुर दरसे साध रामलाल गामै। भाई सत्त की सरन सुहेला
प्रशन— मालिक दाता को क्या वचन दिऐ।

उत्तर— गुर के शब्दां मन दै हालौ सत्तगुर जीरी सीख विचारौ पढ़ै हरिदास हुकम सत्तगुर के किये किये ।
कौल चितारौ जो त्रवाचा के साथ कौल करे है—(1) ग्यान की परतीत (2) सिर घर की वादी (3) हिन्दू तुरक के बीच साध सत्तनामी कहाऊं (4) उदादास वावा मेरे गुर मैं उदादास वावा का सिख।

प्रशन— स्वांस सुमरन कैसे रिंज नहीं खन्डे।

उत्तर— स्वांसा सुमरन रिंज नहीं खन्डे, सनमुख लेखा देत।

प्रशन— अजर वस्तु (सत्त, सत्तअवगत) नाम हृदय में कैसे भिदैगों।

उत्तर— हांजी सूतौ खरग धसौ तेतीसौ सरा कहै मत चूकौ जी। अजर वस्तु तुम जिरौ समझ के कहे सुनै मत दूखौ जी।

प्रशन— सुमरन कैसे और किसका करें।

उत्तर— सुमरन कीजै एक का निरत लेउ निरताय, अन्दर लौ लागी रहे वाहर क्या दिखलाय ।
"सत्तअवगत, सत्त का सुमरन स्वांस से करो।"
सत्त समझ कर सुमरन करना। पर हर झूठ सांच संग रहना।

प्रशन— ईमानदार पूरा कौन।

उत्तर— ईमान जो मन की धारना। डिगै नहीं कहूं और, सरे रहै सांचे मते जब पहुंचे निज ठौर

प्रशन— कौन सा धन सच्चा।

उत्तर— शवद वरावर धन नहीं जो कोई जानै वोल। हीरा लाखां पाइया शब्द न आवै मोल।

प्रशन— तकसीर गुनाह, पाप कैसे माफ हो।

उत्तर— वंदा होय और लाजिम आवै जाहिर कर तकशीर वकसावै।
कह डण्डौत तकशीर बकसाई। जब शक्ति की कोख छुटाई।

प्रशन— ब्रह्म क्यों बनाया।

उत्तर— बन्दगी करन कौ ब्रह्म बनाया। सत्तगुर समझावन कौ आया।

प्रशन— आगे क्या करना है कैसे जानें।

उत्तर— माफिक भगत शवद को परखै। जिसकौ करनी आगे दरसै।

प्रशन— आस किसकी करै।

उत्तर— साधों करौ अवगत की आस। ऐसै कहें उदादास।

प्रशन— भगत किसके पास नहीं।

उत्तर— जाके वाहिर और और मन माही। भाके भगत सरतेर नाहीं।

प्रशन— सत्त की भगत किसनै पाई।

उत्तर— सत्त की भगत ऐसी हो भाई। कोई क्रोड़ा मंझे बंदा पाई।

प्रशन— दाता कौन हैं गत मुकत किसके हाथ में है।

उत्तर— तुम सत्तगुर सकल के दाता। गत मुकत तुम्हारे हाथा।

प्रशन— अवगत आप का मता क्या है।

उत्तर— यही मता है अवगत आपका सत्तगुर सौंपा आय। चौकस दुरस सत्त ही सत्त भगत तना और भाव।

प्रशन— विथा कौन काटै।

उत्तर— विथा काटै जो सत्तगुर काटैं। नाहीं अहुंटा जनम गमावै।

प्रशन— भगत कैसे होगी।

उत्तर— कुवध कटै जो सत्तगुर काटैं। भगत होइगी तन के साटें।
तन साटें बिन भगत ने होई। तन मन सौंपै साधू सोई।

प्रशन— जीव, जानवर, पसु, पंक्षी, कीड़े पहले क्या थे।

उत्तर— पांच तत्त का पिंड किया था। मनखा जनम उन्हूं कौ दिया था।
भूल गया सत्त सुमरा नाहीं। जीव हुआ चौरासी माहीं।

प्रशन— सत्त सुमरन के क्या लाभ हैं।

उत्तर— साधौ सनमुख मिलियो भाई। सत्त सुमरन सै होय सहाई
सत्त सुमरन ऐसै कर जानौ। पांच पचीस एक घर आनौ

शवद परख मन राखौ धीर। वांह जो पकड़े दास कवीर

प्रशन— सत्तगुर कौ कौन सिर पर राखै।

उत्तर— सत्तगुर कौ जौ सिर पै राखे। िकरतम सब ही मन से त्यागे
त्यागे झूठ सांच कौ जानें। गम कौ छांड़ अगम कौ मानै

प्रशन— सत्तगुर ने किसकी बांह पकडी़।

उत्तर— संहस भरम कौ मानै नाहीं। सत्तगुर उनकी पकडी़ वांही

प्रशन— अनभै भगत भेद कौन पावे।

उत्तर— सत्त शवद का सेल समाहौ। उनभै भगत भेद तुम पावौ।

प्रशन— भगत करना आसान कैसे हो।

उत्तर— किसव सुहेला पावै सोई। टन का लालच करै न कोई।

प्रशन— उस घर का भेद किसने नहीं पाया।

उत्तर— अहूँ करी जिन भेद न पाया। कुवधी अपना जनम गमाया।

प्रशन— साधो ने मिलकर क्या विचार किया।

उत्तर— सत्तनाम विना दरद भारी। मिल साधन ग्यान विचारी हो सत्तनाम विना दरद भारीटेक आवौ आवौ गुरू जी हमारा तालब तलब करै छै थारा।

प्रशन— सत्तगुर साहिब किसको दर्शन देकर सच्ची सीख सुनाते हैं।

उत्तर— सत्तनाम सै सुरत लगावै। जिसकौ सत्तगुर सांची सीख सुनावै

6 सच्चे गुरू सत्तगुर गुरू बाबा उदादास की कृपा मेहर उपकार जो सहस्त्र बन्दो पर करी

(ल) जब कलयुग ने कहर कमाया। सो अवगत कौ नाय सुहाया।
जुग ऊपर हुकमी सत्तगुर आया। हेला दे दे—साध जगाया।

(ल) दास परदार था सत्तगुर मिले अनंत फल। झड़त सब कल्प मनके विकारा **5** अश्लोक **8**

(ल) पहर बारीक मै महर सत्तगुर करी। आन कै साध सूता जगाया **8**
उदादास हैं सिख अवगत के। म्हानै भौ की नदी सै त्यार लाया **9** अश्लोक **12**

(ल) उदादास गोरखजी के सिख है इनके दरसे पार उतरियै **4** वानी **2**

(ल) हांजी साहिव हरिया तौ विप्र गरीवी से गावै। साहिव चरनौ लगा सोई जीआ **5** चरनौ की वानी **3**

(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। तौ जिन जौ अनभै आनी **3** (आदि शब्द की वानी)

(ल) हांजी साहिव उदादास गोरखजी के सिख हैं। साहिव अनभै का भेद वताया **8** चरनौ की वानी **5**

(ल) हांजी साहिव संहस भरम का दाग लगा था। साहिव साध संगत मिल धोई **2**
हांजी साहिव भली भई गुर पूरा पाया। शाहिव दिल की तौ दुविधा खोई **3** (चरणों की वानी **8**)

(ल) हांजी साहिव उदादास गोरखजी के सिख हैं। साहिव तुम दरसे गत पाजै **4** (चरणों की वानी **7**)

(ल) सत्तगुर दरसे वीरभान गामै। म्हानै स्वांस सुमरन पाया **4** (वानी **10**)

(ल) उदादास गोरखजी के सिख है। इन चाकर ठेठ लगाया **3** (वानी **10**)

(ल) उदादास गोरखजी के सिख है। इन सांची सीख सुनई (वानी **11**)

(ल) हांजी मिटसी खलक जे साध है। अमिट। जाकै अन्दर पन का धागा उदादास गोरखजी के सिख है। इन भेद किया चित लागा। **3** वानी **14**

(ल) उदादास अब मेरे प्रानपत आयेटेक तुमकौ तौ हुकम हुआ अवगत का।
तुम भगत डिढावन आये **1** (वानी **15**)

(ल) एक बूंद की आस करत थे। तुम भर भर अमृत प्याये **2** (वानी **15**)

(ल) जुग परलौ की कौन चलावै। तुम महा परलौ से वचायै **3** (वानी **15**)

(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन अनभै का फल दिया **3** (वानी **17**)

(ल) उदादास जी जीउ सै ब्रह्म तुम कीयाटेक (वानी **18**)

(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन भौ से लिया राख (वानी **314**)

(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन दिया दीपक जोय 4 (बानी 32)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इनके दरसे हुआ है सुकाज 4 (बानी 33)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। जे चाहा ही भर देसी 5 (बानी 23)
(ल) सत्तगुर दरसे संसा मेटा। दिया अनभै दीपक जोय 2 (बानी 35)
(ल) हांजी अवगत हुकम किया सत्तगुर कौ जब जे साध जगाया।
कलजुग काट सिर पाधर सतजुग ऐन कमाया 4 (बानी 40)
(ल) हांजी उदादास गोरखजी के सिख हैं इन कुवध काढ़ी मार।
लालमन कौ भगत दरसी अनभै का विस्तार 4 (बानी 49)
(ल) हांजी उदादास गोरखजी के सिख हैं, ये तौ जुग-जुग हुआ छै जमान।
महिर हुई हरीदास ऊपर, दिया सत्त का ध्यान 4 (बानी 53)
(ल) खुले जी कपाट म्हानै सत्तगुर दरसा। मिट गया कुवध अंध्यारा 3 (बानी 61)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन जुग-जुग पार उतारा 7 (बानी 61)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन दिया शबद अजीत 3 (बानी 68)
(ल) सत्तगुरू शबद दुधारा दिया। भाई मिट गया कुवध अंध्यारा 3 (बानी 69)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन दुविधा दूर उठानी 7 (बानी 70)
(ल) चेतन कर चौरासी मेटी। घुरू म्हारे लाये गत का गैला। 3
उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन शबद बताया पहिला। 4 (बानी 73)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इनके चरनौं लगा सोई जीता 4 (बानी 78)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन दिया शब्द विचार। दरसां सै दरजोधन गामैं।
साध संगत की लार। 4 (बानी 90)
(ल) सत्तगुरू तौ कृपा करी दई संजीवन आन।
सतवादी सोई जानिये जाके अन्दर शब्द पिछान। 9 (जथा 4)
(ल) सतगुरू हैं ऐसे उपकारी। जिन अनभै सुनाय किये औतारी। 15 (नौनिद्धी 8)
(ल) उज्जवल किया भगत जब दीनी। हम पै छाय सत्तागुरू कीनी। 12
छाया करी छुटाई भिरांती। साधौं मिल जौ एकै पांती। 13 (नौनिद्धी 9)
(ल) सत्तगुरू गुरू बहुत गुन कीया। निरभै अघट खजीना दीया। 4 (नौनिद्धी 10)
(ल) सत्तगुरू दरसे टोटा मिटिया। कुमत क्रोध पाप सब कटिया। 9 (नौनिद्धी 12)
(ल) हमकौ सत्तगुरू पूरा भेटा। झूठ भरम का संसा मेटा। 19 (नौनिद्धी 13)
(ल) उदादास गोरखजी के सिख हैं। ये तौ हुकुम करैं सोई होय। 3 (बानी 78)
(ल) अगम अगोचर देखिया जहां अवगत हैं आप।
सत्तगुरू तौ कृपा करी दई अनभै भगत की छाप। 7 (जथा 4)

7 पूरे साधों के लक्षण

(ल) समदृष्टि शीतल सदा कुद्रिष्ट नहीं व्यापंत।
ऐसे लच्छन साध के मूढ़ कहां समझन्त।। 3 (पंडगीता 1 पेज 107)
(ल) खिमा खिमत लीये रहे ग्यान ध्यान राचंत।
पंड कहैं हो पंडिता यह लच्छन साधन्त।। 12 (पंडगीता 1 पेज 109)
(ल) हांजी मिटसी खलक जे साध हैं, अमिट जाकै अंदर पन का धागा।
उदादास गोरखजी के सिख हैं। इन भेद किया चित लागा। 3 (बानी 14 पेज 139)
(ल) भगत करै जुगत लै खेलै। भाई साध कहामै सोय। 2 (बानी 32 पेज 162)
(ल) जग मैं साध रहै इन सूला। जैसे पानी मैं कमल जो फूला। 5 (बानी 80 पेज 214)
(ल) साधां का तन हुकम खुसैला। जिन आदू शब्द पिछाना पहला। 20 (नौनिद्धी 2 पेज 283)
(ल) साध शीतल बानी बोलै। कोई भेदी मिलै खजीना खोलै। 11 (नौनिद्धी 5 पेज 302)
(ल) सम दृष्टि लच्छन पिछानै। मन मैं दुविधा कभी ना आनै। 12 (नौनिद्धी 5 पेज 302)

(ल) ताामस तड़क साध के नाहीं। जिसकै शब्द भिदा मन माहीं। **13** (नौनिद्धी **5** पेज **302**)
(ल) वदफैलों देख साध नहीं हंसे। शब्द पिछान महिला बिगसै। **14** (नौनिद्धी **5** पेज **302**)
(ल) साध होय टोटा नहीं बंधै। खाली वाक परत नहीं संधै। **18** (नौनिद्धी **5** पेज **303**)
(ल) जिन सतनाम सही कर लिया। धन धन साधौ उनका जिया। **29** (नौनिद्धी **5** पेज **305**)
(ल) ऐसा साध भगत के माही। देख पराई झम्पै नाहीं। **10** (नौनिद्धी **6** पेज **307**)
(ल) साध बिड़द ऐसा रे भाई। जाकी सिगली पिरथी सिफत कराई। **11** (नौनिद्धी **6** पेज **307**)
(ल) सहंस भरम कौ मानै नाहीं। जाकै सांचा शब्द भिदा मन माही। **22** (नौनिद्धी **13** पेज **340**)
(ल) हीरा कौ जौहरी निरखै। ऐसा साध शब्द कौ परखै। **23** (नौनिद्धी **13** पेज **340**)
(ल) जौहरी होय खोटा नहीं खाये। साध होय पाड़ा नहीं लावै। **24** (नौनिद्धी **13** पेज **341**)
(ल) हांजी साध तौ सत्त शबद भेदी झूठ नहीं काम। परस पढ़े सत्त एक है,
तुम देउ कुवध कौ जान। **14** (बानी **47** पेज **181**)

8 **ज्ञान वानी**

(ल) गरब को छाड़ दे दर्व भी जायेगा। मूढ़ मन मगज मै काई हारै।
(ल) उदादास हैं सिख अबगत के। कान सुनियौ साधौ ग्यान सारा।
(ल) मन तेरी नाम सै गत्त होय। गत्त होइगी सतनाम सै रे। भामैं नौखण्ड पिरथी जोय।
(ल) सत की टॉकी टुक टुक लागी। भाई सकल जहान माही देख।
(ल) ये हो मन शवद परख ले हो वीर। भाई मन शवद परख ले हो वीर।।
(ल) जिमी असमान थरपना थरपी जा दिन उदादास उज्जीर।
उदादास नाम भेद सै पाया। भाई जे हैं दास कबीर।।
(ल) इच्छा सेती कीया बीर। इच्छा का नाम है दास कबीर।।
(ल) हांजी चौरासी मै नाय भरमै शब्द ही की आन।
सत की चेरी लक्ष्मी रे भाई सत समान न आन।।
(ल) हांजी गोबिन्दा गरभ माहि औतिरा जानै सब संसार।
आवै नहीं जाये मरे नहीं कवहूं सृष्टि उपावन हार।।
(ल) वह प्रतिपाल सकल सै न्यारा। लोगौं किनहूं न जाया नार।।
(ल) सतगुरू दरसे साध तेजराम। गामैं म्हारे सिर ऊपर करतार।।
(ल) मन भाई जागधने दिन सूता। सोवत है ताको सोवन दे सतनाम सुमर ले तू तौ।
(ल) अनन्द निवाजा जी ओं आदि शवद करतार।
(ल) दरगह अरज पहुंची जी आदू साधां री अरदास।
आदू सत्तरा चाकर जी स्वामी उदाजीरा दास।।
(ल) धरन डिगंती जोग हैं और जोग डिगै आकास। इतनी बात विजोग है डिगै जो अननीदास।।
मृतक जिया मान लेउ मानौ समदां सूख। पंड कहै मानौ नहीं अनन बंदो चूक।।
(ल) सतनाम बिना कुवधी दुख पासी। बंधा जम के हाथ विकासी।
(ल) नहीं अन्तर कोई राखौ भाई। एकै की पैदायस बनाई।।
(ल) भेदी बिना भेद नहीं पावे। भिदी भगत सतगुरू मन भावै।।
(ल) सांचे सतगुरू भेटिया सांचे अवगत आप। सांचे साधां परखिया म्हानै मिले उदादास।।
(ल) इच्छा की है ऐसी दया। शतगुरू उसके माहिं समाया।।
(ल) उसका चेला सतगुरू आदू। भगत भेद कोई समझे साधू।।
(ल) रिजक मौत अवगत के सहारे। उनके चेला कौ कौन मारे।।
(ल) सतगुरू का समाचार ते पूछिया जिन शब्द पिछाना नाहि।
उनकौ तो दरसा नहीं वे दुर गये दुवधा माहि।।
(ल) हांजी करौ बन्दगी जिसकौ करनी, जे अवसर मत चूकौ।
अजर वस्तु तुम जिरौ समझ कै, कहे सुने मत दूखौ।।

(ल) लोक की लाज को त्याग तैयार हो। खूब कारज जब होय तेरा।।
(ल) सत शबद से कोई एक भेदी। भेदी सोई कुबध को छेदी।
(ल) हांजी छै दर्शन परपंच छियानवे, इन में पड़ मत भूलो।
सांची तौ सीख सुनो सतगुरू की, कल की कथनी छाड़ो।।
(ल) पल पल में रहियौ सावधान अवगत फुरमाया।
(ल) साधौ भेद भिदाजी म्हारे मन से।
सतगुरू हमको न्यौ फुरमाया। तुम सिजदा करो मत किनसे।
(ल) पिरथी को परत नवै नहीं वंदा। तौ नाम के नाके नैसी।।
(ल) जिन नै भगत सत की जानी। भांग और पान परत नहीं खानी।
(ल) सुमर सतनाम को जान हिरदे सही। लेऔ गुर ग्यान भौ पाार उतारे।
(ल) शब्द उदादास का भ्रान्ति मन मत करो। लेऔ गुर ग्यान गुन है अपारा।
(ल) हांजी साहिब शब्द परख और भगत करैला, साहिब मुकत पामैला सोई।
(ल) होड़ा होड़ी भगत ना होई। भगत करी जिन दुविधा धोई।।

9 महापाठ मांत्रा

एक नाम सतअवगत आप जोगी गोरख जी का महापाठ।
सतगुरू उदादास बताया उदै घाट। कहैं कबीर सबद विचार।
शबद सच्चा विघन सब छार। आप जोगी गोरख को डण्डौत। भावा उदादास को डण्डौत। शतगुरू को डण्डौत। शतनाम सही।

10 शीश टेक बीनती

शीश टेक बीनती करो भौसगर के तीर। धरती पर पग धरौं रच्छा करैं कबीर।।
कबीर साहिब डण्डौत, सतअवगत को डण्डौत, बावा उदादास को डण्डौत, सतगुरू को डण्डौत। शतनाम सही।